Principal Investigator:- डॉ.बी.डी.सगरे

Name of College:- लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,सतारा.

File No. यु.जी.सी.पत्र.क्र. -२३-१८८/12(WRO)डी.५/२/२०१३

लधु सशोध परियोजना (सारांश)

"हिंदी और मराठी आंचलिक उपन्यासों में चित्रित आदिम जीवन का प्रवृतिमूलक अध्ययन "

आधुनिक युग का साहित्य समृद्ध ,संपन्न,बहुआयामी रहा है।साहित्यकार अपनी अनुभूति को अभिव्यक्त करता है। युगबोध ,सामाजिक मान्यता ,आवश्क्तापरचिंतन करनेवाला साहित्य युग की देंन है। उपन्यास को आधुनिक जीवन का महाकाव्य ,वर्तमान का इतिहास मन जाता है । साठोतरीकल में विशिष्ट भूभाग ,वहां रहनेवाली जनजाति ,उनकी समस्याए ,नारी जीवन ,सामाजिक,धार्मिक प्रकृतिक स्थिति का अंकन करनेवाली विधा आंचलिक उपन्यास है।

आदिम जनजीवन से जुडा साहित्य 'आदिम साहित्य 'मन जाता है ।आदिम का अर्थ वन ,जंगल में रहनेवाला ,नगरों से दूर अप्रगत एसी जनजाति 'आदिम ' मानी जाती है । उसे 'जंगली' 'वनवासी' 'आदिवासी' 'असभ्य' भि खा गया है ।उनकी अपनी बोली ,पृथक व्यवस्था ,मान्यताएं रही है।रहने के लिए झुग्गी झोपडी ,खाने के लिए जंगलो में प्राप्त फल ,फुल,बीमारी में जड़ी बूटी ही है। यातायात का आभाव ,अशिक्षा ,स्वास्थ्य की असुविधा ,खानखदान से विस्थापन,मिशनरियों का प्रभाव ,सरकार की उदासीनता से आदिम जीवन आज भी अप्रगत ,उपेक्षित रहा है । आदिम अपने प्राचीन संस्कृति के रक्षक है।घोटुल सांस्कृतिक केंद्र ,गुन्दना शुंगार है।देवता को प्रसन रकने के लिए 'बली'का महत्व है ।धुमदाम से उत्सव मनानेवाले मस्तमोजी आदिम है ।स्वछन्दी ,भोले ,आदिम का कुल मातृसताक होने से नारी को सन्मान देते है ।भारतीय अन्य समाज की अपेक्षा आदिम नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

सामाजिक ,सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा करनेवाली आदिम जनजाती है ।अंधविश्वास का गहरा प्रभाव होने से देवी देवता,बलिप्रथा को माननेवाले आदिम है ।व्यवसाय परम्परागत होने से अर्थाभाव जीवनसाथी बना है ।खान-पान,रहन-सहन में पिछड़ापन ,जाती गोत्र,जाट-पंचायत,घोटुल'गूंदना,समूह भवनाए विशेषताएं है । आदिम अंचलो में सरकारी विकास योजनाएं

कागज पर रही ,योजनाएं कहाँतक लाभकारी हैं ?यही उनकी समस्या है?सरकारी अफसर ,पुलिसों के संदर्भ में आदिम विद्रोही है।उपन्यासकारों ने इसपर प्रकाश डाला है।

आदिम नारी को अधिकार संपन बनानेवाली जनजाति है ।धार्मिक व्यक्ति से पीड़ित जमींदारो की भोगवस्तु,प्रथा से शोषित ,आदिम नारी आज संघठित होकर अस्मिता की रक्षा कर रही है।नारी मुक्तिदल ,नारी संघठन का निर्माण होना इसका प्रमाण है ।आज के साहित्यकारों ने परिवर्तित नारी पर प्रकाश डाला है ।बिंदु,सावित्री,प्यारी,वनतरी,झिरिया,नागा,मुंडा,युवतियां इसके प्रमाण है।आदिम समाज नारी रक्ष हेतु युद्ध भी करता है।

हिंदी उपन्यासकारों ने स्वयं पहाड़ी अंचलों की यात्रा की,या स्वानुभूति के आधार पर उसका अंकन किया है।'शालवनों का द्वीप ,' 'वनवासी ' वन के मन में ' 'जंगल के आस पास ' ;जंगल जंहा सुरु होता है' ;जंगल के दावेदार ' 'पहाड़ी जीव' 'भूख 'आदि उपन्यासों से यह स्पष्ट होता है।डॉ.महाश्वेता देवी,राजेन्द्र अवस्थी,संजीव,स्वानुभूति का अंकन करनेवाले रचनाकार है।

हिंदी के साथ साथ मराठी साहित्य में भी महाराष्ट्र के विविध पहाड़ी अंचलों में रहनेवाले आदिम जीवन की कथाएं चित्रित हुई है ।वारली,गोंड,कोरकू,भिल,ठाकर,माडिया,कतकरी आदि जनजातियाँ ठाणा,डहानू,रायगड ,गडचिरोली ,दुलिया,नंदुरबार,आदि प्रदेशों इ रहनेवाली जनजाति है।जंगल,जमीं,पहाड़ों पर अपना अधिकार माननेवाली यह जनजाति है ।आदिवाशी विकास परिषद,वनवासी सेवा संघ,आदिवासी एकात्मिक बालविकास केंद्र,स्वाध्याय परिवार,आदिवासी संशोधन व् प्रशिक्षण संस्था पुणे,नवसंजीवनी आदिवासी संस्था ,उसुफमेअरली सेंटर.तारा समता केंद्र आदि विभाग आदिमों के विकास हेतु कार्यरत है ।अनुताई वाघ,ताराबाई मोडक,गोदाबाई परुळेकर, शामराव परु ळेकर, सिंधुताई सपकाळ ,बाबा आमटे आदि अनेक कार्यकर्ता भी पहाड़ी इलाकों में जाकर आदिमों की सेवा कर रहे है।

हिंदी उपन्यासों में परंपरागत,शोषित, आदिम जीवन पर गहराई में चिंतन किया है ।उनकी सामाजिक,सांस्कृतिक आर्थिक स्थिति ,शोषण के विविध आयाम के साथ चेतनापर प्रकाश डाला है।मराठी साहित्यकारों ने आदिम जीवन की चित्र प्रस्तुत किया है ।मराठी की रचनाएं आदिम जीवन की सामाजिक विरासत स्पष्ट करती है । सभी साहित्यकार मुक्तभोगी तथा आदिवासी कार्यकर्ता होने के कारण यहाँ न काल्पनिकता है न रंजकता ।ए सभी घटनाएं इसका प्रमाण है की रचनाकार और रचनाएं आदिम आंचल की वास्तविकता है। हकीकत ,सच्चाई है।